JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

नशा नवयुवक और स्वास्थ

भरत कुमार
शोध छात्र विधि विभाग कुँमाऊ विश्वविद्यालय नैनीताल

सारांश

एक स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है।

अरस्तु

पृथ्वी की सबसे अमूल्य वस्तु जो हमें मिली है वह है मनुष्य का जीवन और इस जीवन को गुणवत्तापूर्ण बनाने के लिए हमें हमेशा से ही समझाया जाता है कि शराब और अन्य मादक पदार्थों का सेवन स्वास्थ के लिये हानिकारक है।

मादक पदार्थों का सेवन संपूर्ण विश्व में व्याप्त रूप से फैला हुआ हैं साथ ही पूरे विश्व कि समस्या भी है। और जब हम इसे पूरे विश्व की समस्या मान लेते हैं तो हमें यह भी मान लेना चाहिए कि यह पूरे विश्व में कही भी उपलब्ध हो सकते हैं।

''मादक पदार्थ पर निर्भता को युवाओ के बीच सामान्य बहुघटकीय स्वास्थ्य विकार माना जाता हैं, जिसके कारण युवाओं में अकसर गम्भीर बीमारीयों की जकड़न और पुनरावर्तन की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। दुर्भाग्यवश बहुत से समाजो में नशीले पदार्थ की निर्भता को अब एक स्वास्थ्य समस्या के तौर पर नही लिया जाता जो इससे पीड़ित होते है, वे कलंकित माने जाते है।''[1]

मादक पदार्थो के व्यसन में विशेष रूप से किशोर शामिल है जिस समय किशोरों को अपने भविष्य निर्माण की नींव रखनी चाहिए, उस समय स्कूल के किशोर सिगरेट का धुँआ उड़ने और शराब पीने को फैशन मानते हैं और अपने महत्वपूर्ण समय को नशे का शिकार कर रहे हैं आजकल बाजार में ऐसे बहुत सारे मादक पदार्थ आसानी से उपलब्ध हो जाते हैं जिसे मात्र 4 या 5 बार के सेवन से किशोर इसका व्यसनी हो जाता है। जो उनके स्वास्थ के लिये बहुत हानिकारक हैं।

प्रस्तावना

''बच्चें कोमल पौधे की तरह है जिनका सफलतापूर्वक फलना व फूलना नाजुक पालन पोषण पर निर्भर करता हैं।''[2]

''बच्चे समाज की संपदा है इस सम्पदा को सुरक्षित रखना समाज का उत्तरदायित्व है। यह भी आवश्यक है कि समाज बच्चों के विकास के लिए सार्थक प्रयास करे, समाज के द्वारा बच्चों के विकास के लिए समुचित कार्य करने पर बच्चें भविष्य में समाज में उपयोगी योगदान दे सकेगे।''[3]

[1] रोजगार समाचार, नई दिल्ली 27 दिसंबर 2014–2 जनवरी 2015 खण्ड 39 अंक 39 पृष्ठ 80
[2] डॉ अशोक कुमार यादव बाल अपराध एक विकट समस्या परिवार की अहम भूमिका एसोस्यिेट पब्लशिग हाउस आगरा प्रष्ठ संख्या 1
[3] भारत में मानवाधिकारों के सम्बन्ध में उत्तरप्रदेश के कुमाऊ क्षेत्र में बाल श्रम का सामाजिक एवं विधिक अध्ययन धर्मप्रकाश यादव शोध पृष्ठ 1

मानवता की सवोत्तम भेट बच्चे है चाइल्ड लाइन इंडिया बनाम एलन जान वाटसन[4] के वाद में कहा गया है की बच्चें हमारे देश के प्राकृतिक संसाधन है वे देश के भविष्य है तथा कल की आशा उन पर निर्भर है। भारत के निर्माणाधीन विचारधारको ने भी भारत के किशोर को ही भारत का भविष्य बताया है जो अपने आप में बहुत महत्वपूर्ण है। भारत के संविधान निमार्णकर्ता ये बात बहुत अच्छी तरह जानते थे की जब तक किशोरों को संरक्षण नहीं दिया जायेगा तब तक किशोर अपने विकास के चरम तक नहीं पहुच सकता है। ''विश्व में बच्चों की सबसे अधिक संख्या भारत में हैं। विश्व का लगभग हर पांचवा बच्चा भारत में रहता हैं।''[5] ऐसे स्थिति में किशोर ही देश का भविष्य है। भारत का भावी नागरिक है जिसके कंधो पर भारत का भार होगा यदि वही किशोर मद्यवयसनीय गतिविधियों में लिप्त होगा तो निश्चित ही देश का भविष्य भी गर्त में चला जाएगा इसलिए यहाँ जरूरी है कि किशोर में मद्यवयसनीय गतिविधियों को रोका जाये। आज भारत में ही नहीं पूरे विश्व में इस समस्या पर कैसे नियंत्रण किया जाये उन्हें किस प्रकार रोका जाये एक गंभीर प्रश्न बना हुआ है।

''बच्चे राष्ट्र की अमूल्य संपत्ति है वे मूक भीड़ है कल की आशा है कल के भाग्य विधाता है एक कहावत के अनुसार बुढापे की छड़ी है इसीलिए उन्हें महान बनाने के लिए अनुकूल वातावरण बनाये रखना सभी देश वासियों का कर्तव्य हैं।''[6]

किशोरावस्था बड़ी नाजुक अवस्था है। इस अवस्था में किशोर, किशोरियों एक नाजुक मोड़ पर होते है कभी–कभी वे अपनों को बच्चा समझते है और दूसरो पर निर्भर रहते है तो कभी अपने आपको पौढ समझते है और अपने को सबकुछ सोचने एवं करने योग्य समझते है। इस अवस्था में उनमे संवेग की बड़ी तीव्रता होती है और उन्हें आत्मसम्मान और अपनी प्रतिष्ठा की बड़ी चिंता रहती है। स्टेनले हाल के शब्दों में "किशोरवस्था दबाव एवं तनाव तथा तूफान एवं संघर्ष की अवस्था है।"

''माता पिता स्कूल और समाज इस बदलाव को अनदेखा कर देते है जो की दोनों पीडियो की सोच में फर्क होने का एक मुख्य कारण है तथा युवाओ के द्वारा किये जाने वाले अपराधो का कारण भी काफी हद तक यही है।''[7]

मद्यवयसनीय की समस्या इसलिये भी महत्वपूर्ण है कि राष्ट्र का भविष्य कहे जाने वाले किशोर में नशाखोरी की लत इस तेजी से बढ़ रही है कि दस वर्ष की आयु में प्रवेश करते ही ज्यादातर बच्चे विभिन्न प्रकार के नशीले और मादक पदार्थों का सेवन करने लगते हैं। अब ये किशोर तंबाखू, गुटखा से लेकर गांजा, अफीम, चरस, हेरोईन जैसे घातक मादक पदार्थो का सेवन करते हैं। और अपने शरीर को और मानसिकता को खोखला करते जा रहे है जिसके कारण देश की स्थति भी बहुत अधिक ख़राब हो रही है।

शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के स्कूली बच्चों और स्कूली छात्राओं, महिलाओं के बीच भी गुटखा, पान मसाला, धूम्रपान की लत बढ़ने लगी है। ये किशोर घर से टूयुशन के बहाने घर से सवेरे शाम निकलते है और रास्ते में सिगरेट फूकते हुए जाते है इसमें किशोरिया भी किशोरो का साथ देती हैं।

नशीले पदार्थो की निर्भरता के कारण किशोरों के बीच सामान्यतः स्वास्थ्य विकार माना जाता है जिसके कारण गम्भीर स्थिति उत्पन्न हो जाती है दुर्भाग्यवश बहुत से समाजों में किशोर नशीले पदार्थ के व्यसन से पीड़ित होते हैं नशीले पदार्थ की र्निभरता को अब एक बहुआयामी समस्या के तौर पर माना है।

कारण

मद्यवयसन के मुख्य कारणों की वजह कई परिस्थितियाँ रहती है जैसे आर्थिक, समाजिक कारण, बेरोजगारी, मीडिया आदि।

[4] चाइल्ड लाइन इंडिया बनाम एलन जान वाटसन ए0 आई0 आर0 2011

[5] 12वी पंचवर्षीय योजना के लिए बाल अधिकारों पर कार्य समूह की रिपोर्ट

[6] न्यायमूर्ति शिवराज वी0 पाटिल, चिल्ड्रेन सुप्रीम एसेटस आफ नेशन ए0 आई0 आर0 2005 जरनल सेक्शन पृष्ठ 51

[7] मोनाल किशोरी सकती योजना महिला सशक्तिकरण एवं बाल विकास विभाग उत्तराखण्ड सरकार वित्त पोषण पेज 24

आर्थिक कारण

भारत बहुवर्गीय समाज है यहाँ पर परमपरागत विचारधारा ने अपना चिरस्थान बनाया है जिसके कारण बच्चो में श्रम कराये जाने की परंपरा दिन प्रतिदिन आर्थिक साधन के रूप में विकसित होती गई है। ''परंपरागत विचारधारा के साथ ही जनसंख्या के साथ ही बेरोजगारी निर्धनता और असमानता ने किशोरों को श्रम करने पर मजबूर किया है इसलिए निर्धन माता पिता अपने बच्चों को अल्पायु में ही अनेक व्यवसायों में कार्य करने के लिए प्रेरित करते है।''[8] दस वर्ष की उम्र में ही बच्चे भी स्कूल छोड़कर कचरा बीनने, होटलों, ढाबों में मजदूरी करने या बाजार में फेरी लगाकर सामान बेचने का काम करने लगते हैं और वे अपनी कमाई से मादक पदार्थ खरीदने में सक्षम हो जाते हैं।

किशोर श्रम करके जो धन आर्जित करते है उससे वे अपने घरवालो का पोषण तो करते है लेकिन श्रम करे की वजह से उनपर किसी का नियंत्रण नहीं रहता है जिस कारण वे अपने को स्वतन्त्र महसूस करने लगते है श्रम की थकान को दूर करने के लिए वे सिगरेट बीडी शराब का सेवन करने लगते है और फिर इसके आदि हो जाते है जिस कारण उनको पोषणयुक्त और संतुलित भोजन नही मिल पाता जिससे उनके शरीर मे पोषण कि कमी हो जाती है और वह कुपोषण का शिकार हो जाते है।

ये समस्या केवल निर्धन परिवार वालो की ही नहीं है जो परिवार संपन्न होते है और जिनके माता और पिता दोनों काम करने के लिए बाहर जाते है और रोजी–रोटी की जुगाड़ में व्यस्त रहते हैं और वे बच्चों पर कोई ध्यान नहीं देते हैं।

ऐसे में अपने को अकेला महसूस करते है और इसी अकेलेपन को दूर करने के लिये वे मादक पदार्थ का सेवन करने लगते है।

मादक प्रदार्थ व्यसन और स्वास्थ के बीच संबंधों को नकारा नहीं जा सकता शराब और दूसरे मादक पदार्थों का सेवन करने वाले बहुत से युवा अकसर स्वास्थ्य सम्बन्धि समस्याओं, मानसिक समस्याओं से धिरा रहता है मादक प्रदार्थ व्यसनीय किशोर में सेक्स समस्या से संबंधित अनेक प्रकार की सोच से पैदा होती है।

''किशोर अवस्था बचपन से युवा अवस्था में जाने को कहते है यह जिंदगी का तनावपूर्ण दौर है जिसमे शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक, सामाजिक तथा व्यावहारिक बदलाव साफ दिखाई देते हैं। हारमोंस में बदलाव के कारण यौन सम्बन्धी विचार, चिडचिडापन, चंचलता, गुस्सा एवं तनाव पैदा होता है। माता–पिता, स्कूल और समाज इन बदलावों को अनदेखा कर देता है जो दोनों पीढियो की सोच में फर्क होने का एक मुख्य कारण है। तथा किशोर के द्वारा किये जाने वाले मद्यवयसन का भी मुख्य कारण हैं।''[9]

समाजिक कारण

समाज प्रगतिशील है जो निरनतर विकास की ओर अग्रसर रहता है और सभी को समाज की गति के साथ कदम से कदम मिलाकर चलना पडता है इस प्रगतिशील समाज में जो पीछे छूट गया उसका मानसिक तनाव में आ जाना स्वभाविक हैं। आज सबसे अधिक कोई इस मानसिक तनाव की स्थिति मे तो वह है बच्चें। ''कई बार बच्चों के मानसिक शोषण में माता पिता भी सहभागी बन जाते है माता पिता अपनी प्रतिष्ठा को आगे बढाने के लिये बच्चें पर क्षमता से अधिक बोझ शिक्षा और अन्य क्षेत्रो में आगे बढ़ने हेतु करते है।''[10]

बेरोजगारी बेरोजगारी में मानसिक दबाव के शिकार किशोर भी नशे की लत अपनाने लगे हैं। शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के दर्जनों युवक नशे की लत के कारण विभिन्न रोगों का शिकार होकर अकाल मृत्यु को प्राप्त हो चुके हैं। दूसरी ओर नशा मुक्ति के लिए चलाए जा रहे अभियान व सामाजिक संगठनों द्वारा इस प्रवृत्ति की रोकथाम की दिशा में किए जा रहे

[8] भारत में मानवाधिकारो के सम्बन्ध मे उत्तरप्रदेश के कुमाउ क्षेत्र में बालश्रम का सामाजिक एवं विधिक अध्ययन, घर्म प्रकाश यादव :–शोध प्रबन्ध प्रष्ठ संख्या 2

[9] मोनाल किशोरी शक्ती योजना महिला सशक्तिकरण एवं बाल विकास विभाग उत्तराखण्ड सरकार वित्त पोषण पेज 24

[10] डॉ फरहत खान किशोर अपचारिता अमर लॉ पब्लिकेशन प्रष्ठ संख्या 159

प्रयास भी अब तक नाकाफी साबित हुए हैं। इस दिशा में नशाबंदी और नशा विमुक्ति को लेकर व्यापक जन जागरूकता अभियान चलाए जाने की आवश्यकता है। चिकित्सकों के अनुसार नशे के रूप में अलकोहल के अत्यधिक सेवन से लीवर स्यानुतंत्र, दृष्टिहीनता की समस्या उत्पन्न हो सकती है। दूसरी ओर गुटखा, पान मसाला, कफ सीरप, सुलेशन के सेवन से मुंह व फेफड़े का कैंसर जानलेवा साबित हो सकता है।

मीडिया

नशे को बढावा देने के लिए मनोरंजन के अच्छे साधनों की कमी और चलचित्रों का गिरता हुआ स्तर है।

समाचार पत्र, रेडियो, टी0 वी0, सिनेमा, पुस्तके आदि का प्रभाव बालक के विचारो और दृष्टिकोण पर पड़ता है बालक समाचार पत्र पड़ता है, साहित्य पसंद करता है सिनेमा देखत है तथा संगीत सुनता है इन सब का संचित प्रभाव बालक के मस्तिष्क पर पड़ता है सिनेमा बाल अपराध और समाज विरोधी व्यवहार के लिए बहुत हद तक उत्तरदायी है सिनेमा स्वयं बालक का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने का प्रयत्न करते है इनमे प्रवेश करते है किशोर ग्लैमर की दुनिया में प्रवेश करते है।

अनैतिक मद्यपान, धूमपान से भरे चलचित्र और कामुक और अश्लील साहित्य बच्चों के मस्तिक्ष पर गहरा प्रभाव छोड़ते है चलचित्रों के माध्यम से वे कई बार अपराध के तरीके भी सीखते है। हमारे देश के कई भागो में चोरी, सेधमारी और अपहरण आदि में सिनेमा का प्रयोग करने के जुर्म में अनेक बालक पकडे जाते है चलचित्र सरलता से धन प्राप्त करने की इच्छा को जागृत करते है यह इच्छा ही साहस की भावना को बढाती है जो अपराध की भावना को मजबूत करती है चलचित्र से नशे की प्रवति बढती है यह किशोर नशा प्राप्त करने के लिए किशोर चोरी और सेधमारी करने लगते है। अगर किसी फिल्म की किसी कहानी में कुछ गलत कार्य को उचित दशाया जाता है तब किशोर के लिए यह संकेत काफी है कि वह इसे आदर्श माने उदाहरण के लिए जब नायक खलनायक को मरता है तब किशोर भी उसी का आनुकरण करने लगता है और वह वास्तविक जीवन आक्रमण क्रियाओं को स्वीकार करता है।

मादक पदार्थ व्यसनय से होने वाले रोग

कैंसर

तम्बाकू और गुटका चबाने से मुह का कैंसर होता है जो जानलेवा भी हो सकता है। आज गुटका मुकेश (मुकेश हराने) की कहानी कौन नही जानता भारत सरकार द्वारा मीडिया टी0वी0 और सिनेमा हॉल में कोई कार्यक्रम शुरु होने से पहले सार्वजनिक चेतावनी के रुप में प्रसारित होने वाला विज्ञापन, मुकेश मात्र 24 वर्ष की अल्पायु मे ही मुह के कैंसर के कारण उसकी मौत हो गयी। गुटका और तम्बाकू चबाने से मुह के अन्दर छाले पड़ जाते है जो धीरे–धीरे बडा धाव बनकर एक कैंसर का रुप ले लेते है।

एच0 आई0 वी0 एडस्

मादक द्वव्य व्यसनीय किशोर सीरिंज के द्वारा अपने शरीर में मादक प्रदार्थ है ये किशोर एक ही सीरिंज को आपस में इस्तेमाल करते है इससे व्यसनीय किशोरो मे एच0 आई0 वी0 एडस् से संक्रमित हो जाते है।

मादक द्वव्य व्यसनीय किशोर कि रोग प्रतिरोघक शक्ति क्षीण हो जाती है जिसके कारण एंटीबाडी के निर्माण में कमी हो जाती है जो रोगो से लडने में सहायता करते है। ऐसे मे व्यसनीय किशोर गम्भीर बिमारीयों से ग्रसित हो जाता हैं।

यौनिक अल्सर मादक द्वव्य व्यसनीय किशोर विभिन्न लैगिक क्रियाओं में लिप्त रहते हैं और एस टी डी रोग जैसे कि रतिज व्रण आतशक एवं ज्ञानेंदिय हर्षीज को सामूहिक रूप से यौनिक अल्सर रोग के नाम से जाना जाता हैं।

सुझाव

नशे के गुलाम ये बच्चें गम्भीर रूप से बीमार हो कर बेमौत मर जाते हैं या फिर अपराध की अंधी दुनिया में प्रवेश कर समाज और देश के लिए विकट समस्या बन जाते है।. सरकार और समाज बच्चों को नशे की आदत से बचाने के जो भी उपाय कर रही हैं, वे पर्याप्त और प्रभावी नहीं हैं. इसलिए जरूरी है कि देश के भविष्य को पतन के रास्ते से बचाने के लिए परिवार से उपेक्षित, गरीब, अशिक्षित और बाल मजदूरी करने वाले बच्चों को नशे से बचाने के लिए गंभीरता से प्रभावी और कारगर उपाय किए जाने चाहिए।

- परिवार सामाजिक संबंधो की अनुसंधानशाला है परिवार समाज की प्राथमिक इकाई है यही पर व्यक्ति को सर्वप्रथम सर्वप्रथम सामाजिक सम्बन्धों का आभास होता है। व्यक्ति राष्ट्र और समाज की न्यूनतम इकाई है और उसमें बडी प्राथमिक इकाई है। घर अथवा परिवार व्यक्ति को सामाजिक प्राणी बनाने में परिवार की अहम् भूमिका है। अभ्यास करना चाहिए।
- जागरूक रहें और हर समय सतर्क रहें। नियमित रूप से कुछ भी खाने या पीने से पहले, जान लें कि क्या इससे नशा हो सकता है।
- बुद्धिमानी से अपने मित्र चुनें।
- अगर आपके परिवार या मित्र मंडली के लोग शराब, नशीली दवाओं या किसी अन्य व्यसनय के आदी हैं, तो इससे बचने के लिए आपको आत्म नियंत्रण का

संदर्भ सूची

[1] रोजगार समाचार, नई दिल्ली 27 दिसंबर 2014–2 जनवरी 2015 खण्ड 39 अंक 39 पृष्ठ 80
[1] डॉ अशोक कुमार यादव बाल अपराध एक विकट समस्या परिवार की अहम भूमिका एसोस्यिेट पब्लशिग हाउस आगरा प्रष्ठ संख्या 1
[1] भारत में मानवाधिकारों के सम्बन्ध में उत्तरप्रदेश के कुमाऊ क्षेत्र में बाल श्रम का सामाजिक एवं विधिक अध्ययन धर्मप्रकाश यादव शोध पृष्ठ 1

[1] चाइल्ड लाइन इंडिया बनाम एलन जान वाटसन ए0 आई0 आर0 2011
[1] 12वी पंचवर्षीय योजना के लिए बाल अधिकारों पर कार्य समूह की रिपोर्ट
[1] न्यायमूर्ति शिवराज वी0 पाटिल, चिल्ड्रेन सुप्रीम एसेटस आफ नेशन ए0 आई0 आर0 2005 जरनल सेक्शन पृष्ठ 51
[1] मोनाल किशोरी सकती योजना महिला सशक्तिकरण एवं बाल विकास विभाग उत्तराखण्ड सरकार वित्त पोषण पेज 24
[1] भारत में मानवाधिकारो के सम्बन्ध मे उत्तरप्रदेश के कुमाउ क्षेत्र में बालश्रम का सामाजिक एवं विधिक अध्ययन, घर्म प्रकाश यादव :–शोध प्रबन्ध प्रष्ठ संख्या 2
[1] मोनाल किशोरी शक्ती योजना महिला सशक्तिकरण एवं बाल विकास विभाग उत्तराखण्ड सरकार वित्त पोषण पेज 24
[1] डॉ फरहत खान किशोर अपचारिता अमर लॉ पब्लिकेशन प्रष्ठ संख्या 159